

हा माया काशी मा ॥ १ ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ १ ॥  
माता ॥ १ ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ १ ॥  
॥ १ ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ १ ॥  
॥ १ ॥ नमः नमः नमः नमः ॥ १ ॥

आर्य समाज  
आर्य समाज

718



हामायाकाजीका ॥ १ ॥ मन्त्र नका विल ॥ २ ॥  
माल ॥ ३ ॥ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ४ ॥  
॥ ५ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ६ ॥  
॥ ७ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ ८ ॥



॥ अङ्ग गम्भिरान् ॥

नागरेव वि॥ यत्न खनन कालः यद्युगम्भ  
साने सितसवृक्षा वायुकिनागम्भ गङ्गितम्भ  
द्या १ गङ्गा नम्भसाने अङ्गकवृक्षा घृणित  
मद्या नङ्गकनागम्भ ॥ ५२ ॥ वृद्धजमजलद्वि  
वक्रियायूनाकुस दिगविदिगं चलिदवक्ति  
प २ अस्तम्भसाने कृष्टिस्तविपम्भन नाच  
यिसहजा आनन्दय ॥ ॥ ककपिद्यायाव

॥ अङ्गानि नीचाघाट ॥

यत्न गम्भिरान्  
वृत्त

तिनमद्या जालाकृन्मम्भाने कर्काटकना  
गम्भ १ कर्पकहेनवा वरुक्कमद्या सप्तसिङ्गनागम्भ  
चरुक्कवृक्षा ॥ ॥ अदृष्टासम्भाने सखया  
लनागम्भ प्रचन्द्रमद्या वरुमहिपूहा २ लक्ष्मिवक  
सम्भाने कपजवृक्षा घृणितमद्या महायदनागम्भ  
॥ ॥ धालाधकम्भसाने प्रतकवृक्षा अननना  
गम्भ प्रवननमद्या २ किपिक्किलिवाता अङ्गनवृ



॥ प्रदेना ॥

जा. कलिक नाग. वर्ष न मघा ॥ ॥ दादसह  
जा. दादसह वना. चन्द्रवक्त्रवदना. दादसनय  
ना २ ह नयि कर्क्या. नाडवक्त्रसम्बन. कासिना  
मिनीय. चाययिवदना ॥ ० ॥ ॥ जगपम  
लि ॥ ताल ॥ त्रिहंदा चाययि जागि. दी देहकवा  
दि २ कमलकुलि अद्यन कनक नयि याल ॥  
॥ ५ ॥ जागि दी पु क वी नूः खलं कन जि ययि

॥ चाययि दी विद्या ॥

मि देना ॥

२ स्वनामरु च प्रियायः वमवर्मयिवयि ॥ ५ ॥  
कुपकनं जागि दी लयन जायि २ महि कु  
लकहियाय अदिया न समान ॥ ५ ॥ सा  
सुहृद्य न बाल का चि कुना नि २ चन्द्रसूर्य  
दूयि य कुन हंदा ॥ ५ ॥ ॥ ह नयि गुजलि हंम  
कुन्दू विवा २ नयना वी द लयन विवा ॥  
॥ ५ ॥ ० ॥







नार्थः दूर्जर्जिपिपिधधनार्थः महाकात्रिका  
हार्थः दक्षिमेयचरगवर्क ॥ ३ ॥ लोचनः हृदयः  
आँठ ॥ कायधयागुः सपित्रः वाक्काययागुः कूर्तुः  
चिठकायागुः नूगलेः हृमनूकः थस्वनाः काय  
वाक्कायचिठः शुधयायः अर्थनस्वताः हनंदूर्जर्जि  
अन्यमूमा लकेताः अर्थनस्वताः हयगमस्वताः अ  
नाः यचरगवर्ककायागुः चतुषास्यनंप्रसन्नरुचमा

य ॥ ३ ॥ अस्याद्वजिनसंस्तुतः सर्वधागुविधध  
कः महाकात्रिकानार्थः दक्षिमेयचरगवर्क ॥ ४ ॥  
लोचननाआँठः जिनशुलसाः मामववृत्ताउपनसंः  
यापयाकादयिआः हनंगुपूयाउपनसंयापयाका  
दयिआः हनंः सिर्जनः नपाः यापयादयिआः हनं  
समस्तयाउपनसंयापयाकादयिआः थनपापदू  
टकायाः निमिर्दिनंजिनाः यचरगवर्ककायागुः यसं







॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पचरगव्यविषधून॥ कनसलिलः सुधरुलधका  
गुन्ननं श्लादयकस्य विष्णात॥ दक्षिनाक्षतिं  
ज्वलकाय॥ ॥ नागहर्षवि॥ ॥ अकानसं  
जातपितृवन ॐ नृ जिषया दय २ जिगिह्वेन वा २  
वक्रामनीयीत वासुकिनाग त्वष्टाग्रहीषन धूनिन  
जलदा॥ ३ ॥ ॐ गद्यपति क्रमात् महाकाल कुत्र  
या लयागीनीगद्य॥ मद्यमांस् मच्चपचरे विधयूजन

॥ श्रीचक्राष्टाष्टा ॥

गृह्णन्तु स्वाजं नु पीयन्तु॥ १ ॥ चवर्गजात नदितल  
धनऊपि यलयाद प्रचर्द्धेन वा २ नृद्रायनी स्वना तऊ  
कनाग कर्कषवागय धूनिन जलदा॥ २ ॥ तवर्गजा  
त विहागव नृष्ट अश्वकया दय नृयलेन वा ३ ॐ दाय  
नी कं कूम कर्कोठ कनाग जाल कलानादित कनदा  
॥ ३ ॥ चवर्गजात पर्वत समुने चूतया दय कपिदरे  
ल वा २ वावाही नका यन्मातृजंग कर्लकलेन वा वल्लीज



नदा ॥ ४ ॥ यवर्जजानं. वववृआ. लभकर्पअयाद. कोधले  
 नवा २ कामाजीवका. मसायमा. अट्टहासप्रचण्डजनदा  
 ॥ ५ ॥ यवर्जजानं. मारुग्रहति. दिऊयक. निपादय. अ  
 नकलेनवा २ वेष्टविष्टामा. अनकनाग. लक्ष्मीवर्ध. रु  
 नासनयूनधज ॥ ६ ॥ यवर्जजानं. पुन्यगृहवाघ. अ  
 अशनयादय. संहानलेनवा २ चामूष्ण. नकाकूलिकनाग  
 धानांधकान. वर्धकजनदा ॥ ७ ॥ यवर्जजानं. अजन्म

ॐ अने. वनयादय. रोषनलेनवा २ महालक्ष्मिधना. सं  
 खपालनाग. किलिकिलि. नावावर्धन. जनदा ॥ ८ ॥  
 लेनव. कालिपाद. रुन्यदादधनयन. अलिधचयन  
 श्वेदवर्धन. नविकवर्धन. मामिह. नूअ. रुव. रुय. रुवर्ध.  
 ॥ ९ ॥ ॥ नागललिट ॥ गालजति ॥ यचरु. नथगत. ज  
 नमलिया. न. समयाचा. निरु. वेध. ना. न. २ द. अ. दि. स. द. अ.  
 व. न. अ. ना. धिया. न. समया. न. न. रु. ल. ति. हा ॥ १० ॥ वील

॥ यचरु. नथगत ॥

॥ अनकनागयाट ॥



वीलध्वज वेधनाय मधुलसमूहा विध्वजालिया २५  
 ईकान वीलदान दयादा दायित्या विध्वनिववाय ॥ २ ॥  
 पूर्ववेधनाय न दक्षिणवत्तसमूह अमिनारुय सिमवा  
 यिता २७ रुन अमाद्य सिधि मास अऊत्य समया न दह  
 चकिता ॥ ३ ॥ समाधि श्रीसम्वन मास काल चक्रं हवउ  
 काय विध्वजालिया २ यागयागीनी वृद्धकनया समया  
 न दह लता ॥ ४ ॥ सिद्धिनाद वांजियाय उमप्रपहार्य

अरुमागिनीमये दानयूय २ ऊनध्वनियूना अवधूवन  
 यियाय कर्ह्या चवध हव न ॥ ५ ॥ ॥ गगनाट ॥  
 तालुक्ति ॥ ॥ नमामि जिनयचर धर्मधनुस्वर्मह शक्ति  
 हवध अनूरुतः धर्मधनुवागी ध्वनं ॥ ६ ॥ नमामि रजि  
 नयचर नदमासु २ दधमि द्वाकिं समहासूयाया ॥ ७ ॥  
 स्वर्गम क्षयातालः हवध श्रीकायात क २ उचउ निव  
 ऊनः महामूनिधया ॥ ८ ॥ धर्म श्रीमिः हान श्रीमि २  
 नयालमधुलमायाः सूयासूयि ॥ ९ ॥ वामह ऊपूर

॥ नमामि जिनय ॥  
 ॥ गगनाट ॥

॥ नमामि जिनय ॥  
 ॥ गगनाट ॥



॥ नमो भगवते ॥

कः धनं धनं २ दहि म न त्रिषु ख भः स व ध नी ॥ ५ ॥  
श्री लो क धन म क ल म हा शु ख ला या २ ना का द्वि ना क श्री  
नू लं द्र म ल द व ॥ ७ ॥ श्री व ज्ञा चार्यः व भू द रु श्वा च  
र्य २ ह न यि वा क व ऊः त्रि ला च वि ना ॥ ॥ ॥  
ना ग के न डि न ल ऊ ति ॥ न क व हू द हू दि रु ऊ का ष्वाः  
२ न ग न म कू ट के ष्मि नी ला य नि ॥ ५ ॥ न मा द वी वि  
घ्रा ध नी त्रि द ष्म य य वा यि ना २ ष्मि द्वि सि द्वि द य नि उ ग  
न ऊ न नि ॥ ॥ द हि न हा हि नि वा म पा रु धा नि २ वि चि

निलेश को ल मा द्या ७

॥ यन हरे ज व स के ना ॥

व यू ष्म मा ला क न ष्म धा नि ॥ ॥ हा नू म द ल मा ष्म धा रु  
ल नू यि नि २ ना ना व ल ल न यू य प्र वी सि नि ॥ ॥ ह न यि  
व ल व ऊ न व ऊ जी ना २ श्री व ऊ द वी च न न मा नू स न ना  
॥ ॥ ॥ ना ग ल लि नः ना ल ऊ ति ॥ स्व न हू ऊ न क मू  
स्व हू द्र य लू धा नि धा न्य म ऊ श्री यू स क वा म २ नि द्वि द  
र्जन व ल व र्ष सर्व किं द व दि न द चि द ह र्म ॥ ५ ॥ न  
मा मि २ श्री व सू च ना द वी न लारु प द हू वि ना रु क न क व  
हू न ल म कू टा मे दि ल लि ना स न द्रा नि द ह न न ॥ ॥

भू न न न मा द्या ७ ॥ व हू न न मा द्या च च ॥



॥ श्री हवउ ननासा ॥  
॥ हवउ ननासा ॥

उद्धत आगनदिष्टा लोकं ध्वज. वामवउपादिगुलाद्वी  
२ उम्वउउलेन्द्रनीलवर्धः वामवउधसूकवर्धः ॥  
॥ चिविकुहिलिमालिनी मूवव्वेन्द्रभुहध्विः  
चामलकृधजयनाकाहसु. चतुवद्वी ॥ ॥ पूर्वमा  
निरुद्र. दकिष्टापूर्धहृद. यश्चिमधनदा. वैश्रवर्धः २ गु  
कासुगुकासपस्वनिद्वी चहृकानाभाऊदाना ॥ ॥  
॥ नागकटादि. नालजति ॥ ॥ श्री हवउ ननासा  
द्वी. श्री हवउ ननासा २ यश्चिमधनदा. यश्चिमधनदा

निलकृकालयाद्याट  
मूउनिनिमयाद्याट

॥ यान्तुका ॥

हा ॥ ५२ ॥ नमामि २ श्री लभयच्छगचेसा. हवउ श्रीगुग्ग  
ध्वनिवउऊगिनी शुन्यता ॥ ॥ पूर्वदिगंस्थित हवउ  
निलवर्धः २ दहि नपात्रध्वनि. वामविन्दधना ॥ ॥  
घस्मनि चोचिऊगिनीद्वी २ गमउंतिनिलावउः ह  
कापसंबजा ॥ ॥ ॥ नागनाट ॥ नालजति ॥  
रयातल कानगपत्राधियाप २ सिद्धाऊगिनी वधूद  
रुनपन्द्रदव ॥ ५२ ॥ नमामि २ श्री लाकृध्वनिरुवन  
नाथा २ कपूनामयऊगत उध्वनि ॥ ॥ हनिहवउका

वर्धनयाद्याट



सुखसुख

ॐ न्यादिगयाला २ नाग ऊ ऊ ग द। वदि न च न छ ॥ ॥  
तुक्क सुक्क न के पाप ह न छ २ व्याधिया निद्र दू ४ ख रु य ह  
न छ ॥ ॥ सुखा व गि ह व न धर्म स न छ २ श्री लो क  
अ न ऊ र्म ऊ र्म अ न छ ॥ ॥ ॥ नाग माल तिल ॥  
गाल मा ० स ह ऊ स पा नू च ह नू च क वि न्या २ त्रि ह च  
न ना था द हि विला सा ॥ ५ ॥ ॥ उ ऊ र्म म हा न स गु ह्या  
हि ष क २ क म ल कू लि अ र्म ऊ ग स र द्वा ॥ ॥ ह्री  
न अ नू पि नि वि अ व्या पि नी २ वृ द न्न व म न म हा

मायजालयाद्याः

निर्माणाम्बुज

सुखदाता ॥ ॥ उद्घाटित नागी का नू धिय प्र वि स  
२ र्था यि या ष ठ च क रे दि या ग य दू ॥ ॥ गु नू य अ द्य  
अ नू र्म व क्रि या २ द हि म ना व नी र्म हा न स मू द्रा ॥ ॥  
ह्री न अ नू पि नी ॥ ॥ काला यि ल जी ठ ॥ ॥ ॥  
ना ग न ह व वी ॥ गाल ऊ ति ॥ निर्मा णा म्बु ज म्बु ग न क ल  
आ. य च ह मृ न म य प नि पू नि ता २ वि ध म य ग हि न य च  
पु ल वाः नी ल व र्ण व ऊ जि व सि स्थ पि ता ॥ ५ ॥ ॥ दू र्म क न  
दू व जा चा र्थ म नु वि न्या जि नः क र्म व ऊ र्म स हि न प्र णा अ नू

मध्वमन्याद्याः



यिनी रवउजिष्वाहिभमनुपयिपूर्वः सुतुना. हवसम  
 दसकनर्धतिष्ठेनदपक्ष॥ ॥ पूर्वदवगतपचरस  
 ग्रसदिर्न. यचरविंशतिरुदिवर्द्धकार्य २ दकिष्टोदवगत  
 वजसत्वः धनूपः त्रिहवधसमवसायायटविशुद्धि॥ ॥  
 पश्चिमदवगत. अन्वसस्थायिना. धववावर्द्धसोधिपसरा  
 जिना २ उर्ध्वदवगत. घेष्ठाद्यावधदिनाः स्नानस्वपूयिष्ठी  
 विशुद्धजननि॥ ॥ आलम्नादिदवगत. अधनयीनावृक्षस्य  
 मवर्द्धनजगत्पिना रपूष्पविन्याजितविधेमय

नमो भगवते

पूजिता प्रदामा मित्ररुधपञ्चिपसाधुता॥ ॥ ॥  
 जोगरेववि॥ निर्मानाविचतुषष्टिदवसनापूहम  
 अगुतकादिवृगनादपूयि २ समिलयवितललित  
 वार्द्धगमिनिनवनिलसूतयक्षकूपनपूयि॥ ॥ ॥  
 अन्नमामिदवी श्रीवज्रवीजसिनि त्रिरयदवधमरु  
 मरुनदवी २ अदियानपूर्वगि चिकामपूय श्रीहग  
 सुविशुद्धमल्लनृत्त्ययनि॥ ॥ वसूदवसनापूह  
 वलधर्मचक्रमोदगदनसंलगचक्र २ द्वाष्टिगतदन

भद्रकृष्णलयाद्या



कमलमहासूर्यचक्रं कावचं यथा ह्येव नार्थः ॥ ॥  
 दहति जिने विद्यादिति नृणां न ह्येदं अवलम्बनं यथा  
 पिनी रयी भदिदं अहमि सूर्यं तेषु जने जिने ह्यनयाय  
 निवीयं यथा ॥ ॥ दय्यनेयति विष्णुजलज्जचन्द्रायम  
 अहिनि सिद्धुमलं तव जदवी २ जलमज्जम तं रुपाय  
 अजलमदुर्जतिना अजममाकुपदं ॥ ॥ ॥ वागह  
 ववी ॥ नमामि र्यदं निमामं किंदवी जगत्सं  
 वागहववी ॥ नमामि २ श्रीरावति महायक्रु सिद्धवी २  
 यचरं तयुपनिवाचाय निदवी ॥ ५२ ॥ नमामि २

ॐ

मि २ श्रीरावति ॥

यन्न निमाम किंदवी जगत्संसा नयपियापित्ता २ ज  
 लमज्जमद्वि सिद्धिमाकुमूकियुष्मदं तना इदं ॥ ॥  
 ॥ ॥ नमामि २ श्रीसूर्या धनदव विजया साहितार  
 दादं वर्षपूषेण विचापित्ता ॥ ॥ नमामि २ श्रीच  
 जनामहि कुनिदवी २ धर्म धातुपयिवापित नित्य  
 नित्ययनि ॥ ॥ नमामि २ मं इव जगत्तचपित्ता  
 र्यधेमामि श्रीयन्न निदवी अद्वि सिद्धिदहिम ॥ ॥

॥ वसुधैव कुटुम्बकम् ॥







ॐ लिङ्गं कायम्

१ आलिङ्गद्वयमानवचतमशगपहेनवस्यनय  
द्वः चाचूतः कालनाभिः त्रिद्वयनमनाहयाः साग्य  
ताः चूदविद्याः आनन्दाः पूर्यमानः निरूपयमसु  
रवर्दः स्वास्यह्लाः गसंज्ञः आवाधोः न कमानः जि  
नगुहानमिर्तः पातुवाः श्रीसम्यगावः ॥ ० ॥ ॥  
१ दज्जज्ज ॥ ॐ आवेणय त्वरेय २ आक्कहिवज्ज र्हेरु  
० आरुमूः ॐ आवेणय त्वरेय २ नज्ज २ नज्ज ४ चालय  
रुहे आरु ॥ ५४ ॥ ॥ लिङ्गाय ॥ ॐ तिष्ठवज्जक्रोधाय

ॐ लिङ्गं कायम् ॥  
ॐ लिङ्गं कायम् ॥  
ॐ लिङ्गं कायम् ॥

॥ मण्डलसमय ॥

ॐ श्रीं वज्रि वदुदति वारुर्वरुं स्वाहा ॥ लिङ्गाय नमः ॥  
जागवनापिः नालज्जनि ॥ मण्डलसमयचक्रम  
हलसंयुक्तं २ द्वादसहजचउचाचूवदय ॥ ५४ ॥  
जानककपूनश्रीसम्यगजागिनि २ श्रीसंयुक्ता  
द्वीनानधी ॥ ॥ त्रिकिणीनामास्वद्युपास्यपुत्रि  
ही २ चाविमानचउथानथयियाय ॥ ॥ कायवा  
कचिरुनि त्रिद्वयने २ दानयतिश्यागुसश्रवणज  
ही ॥ ॥ यागयागिनीभनि ॥ समदहलवे २ अस्त

॥ मण्डलसमय ॥  
॥ मण्डलसमय ॥  
॥ मण्डलसमय ॥



मञ्जुनीह्रवूव ॥ ॥ ॥ याग ह्यवि ॥ ताल  
यकतलि ॥ ॥ छिदलसूपाग्रवदिनवनः मधु  
लनाजित छिद्वद्यजनही २ नक्तनेप्रपछिद्यने  
मानचतुवद्यष्टच्छुद्धी ॥ ५२ ॥ दविकनर्हि कया  
लधवाः द्विवत्तनलसिलमाला ३ कमलकुलिस  
द्रियताननः वाऊयिसहजसूप्रियधी ॥ ॥ चक्की  
सिनकर्णकुलुक (कु) केष्ठक ग्य लाहा (थ) पाच

॥ अविस्मृत्ययादा ॥

ॐ २ कृत्वा तु मेखनं अनूपमचलं नोपवह  
 रणे ॥ ॥ हव्यदयानेनैकैर्जुष्यते दहिन  
 स्नानकूलिम् २ लावालवविवर्जितं अनूपवग  
 यनेनैव यिही ॥ ॥ यद्रूपवज्रपदसिलगतधनि  
 या गवकिहासकूलिमा २ अनूपवसिधिमार्ज्य  
 दायनीः यनमाभिजीवज्जयागिही ॥ ॥ ॥



॥ नकावर्द्धन्याद्यात् ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ॐ बुद्ध्या वाट ॥

॥ अस्मिदि ॥



अक्षय सुलवे. नचयिदाने सम्यजवाया ॥ ॥  
 कुलिगधेष्टु. गऊचर्मप्रिगू. कनक्ति. दमत्र  
 शुहसाहिना २ मभयू निसकपात्र. उव दौला. पा  
 सयत्र शुवक्र जिप. गधना ॥ ॥ यश्चि नवत्रः  
 मकूत आलंकृता. षष्ठु मूद्रा. आरुचव विहृषिता  
 २ आलिका निद्रयि आलिह चायमि वाद्यचर्मनि  
 यमधकृष्णनू ॥ ॥ नलसिलमाला नम्याजी

सम्यजदिव्यचक्रुनिनिकरूहहिना २ उत्रमऊमभा  
 चुरुरयाय अजहः अऊनियत्रमादिवऊगीना ॥ ॥  
 ॥ ॥ यागमात्रसि ॥ नालमा ॥ ॥ सहजसूत्रात्रह  
 हत्रवकनिय २ प्रित्वननाथादहिविलासा ॥ ५ ॥  
 हऊमिसहात्रसगुह्यारिश्चक २ कमलकुलिग. स  
 यागसंख्या ॥ ॥ स्नानयत्रयिनि. विध्यवायीही २  
 कदनि. त्रमने. महासूत्रवदाना ॥ ॥ उद्गाधवउना

॥ सहजसूत्र ॥

॥ मार्याजालेष्टाट ॥



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

निकायधियप्रविश २ यायिया वउचव ह दियग  
इ ॥ ॥ गुनप्रसाद्य अनुरूपक्रिया २ दहिम. नाप  
निर्माभयसमूहा ॥ कानधपूयीनी ॥ ॥ ॥  
नागकक्रान ॥ नालषट्काल ॥ ॥ नीलवर्णवाग्नि  
दवीचक्रिकुलकठिलाचक्रमखल हविनपूय  
पक्षपिता ॥ ३ ॥ सुसमानसं हकिर्तयुक्तिता २ स्व  
स्वविजाऊन समूल्यनादवीमामकी ॥ ॥ नमा

३३

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ भूताननिष्ठाया ॥

पितावर्ध

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ भिन्नवर्ण ॥

मि २ दवीगीमामकी २ नवजीवनीदवी. त्रिनेत्रसु  
सुन्दरी ॥ ॥ यचरकृष्ण अमृतपात्र २ सुजासून  
त्रे. वन्दितचपल ॥ ॥ ॥ नागवह्नि ॥ नालम  
य ॥ ॥ पीतवर्णमामकिदवी. विश्ववापिता २ अ  
मृतपानत्रवाग्नीदवी ॥ ॥ नवजीवनलोक  
पसुन्दरी २ स्वस्वीजाऊन समूल्यना ॥ ॥ चक्रिक  
कुलकठिलाचक्रमखला २ लज्जहर्तयूकागणह

॥ लज्जहर्तयूकागणह ॥



॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

३ क्का  
दिवता ॥ ॥ नमामि वायूनी देवी सूर्य ध्वनी २ प  
ज्यामिममना वांछिता ॥ ॥ अतगुचयन धाय  
मामिरुक्ता २ अनुरुचय सिद्धिमा कुप्येद ॥ ॥  
नागकद ॥ तालषट्काल ॥ ॥ हनिन वर्धुगि ॥  
नयनसूदनी नवजोवन नावदोदहा ॥ ३ ॥ तु  
कदवीमामकी वायूनी देवी ॥ ॥ अस्माद ग हजा  
रुलननुकिय ॥ २ य चरवूध ह्यत्रया तुक्तजगि

॥ निलेदकनययाद्याट ॥

॥ प्रियप्रमथानि ॥

दीसनी ॥ ३ ॥ हकाल हनिन वर्धु हाकायगध  
नाशन २ कीकायवीर्य हना अमृताकार ॥ ॥  
सतगुचयन धाय २ हनयि सिद्धि  
वज्र वजाचार्यगीर्ण ॥ ॥ ॥ नागमात्रजि ॥ न  
लमाथ ॥ ॥ प्रियप्रमथानि २ वजायि २ द  
ल्लिगलसूत गृगता ॥ ३ ॥ हृदिकल्लुसिज  
साउदिनसूनादि २ अनुराजवृद्धी हनियोगि ॥

॥ सहजसूयाद्याट ॥



॥ मायाजाल ॥

नदितसूत्रपीभीष्टसूत्रमी २ अधिपयवनयूयित्तच  
क ॥ ॥ एतेकापयषितकुलि ॥ २ तद्वद्वयवाषरू  
याययिषूर्ष ॥ ॥ षट्सफचक्रजामतिनिनादि २  
अन्यान्यमाघसमहासूषदाना ॥ ॥ ॥ जागद  
अथक ॥ ॥ मायाजाल ॥ विन्दुसदिसुपिना २ माहमाया  
दर्यनकादिलेमायामाह ॥ ॥ ॥ यगीतानु ॥ ॥ अ  
॥ २ जागद्वषमाहनः कादिले निप आ ॥ ॥ ॥ अ

॥ सहजसुखावादा ॥

संज्ञाला

मिषनयनदृषकपूचिया २ कूमरीचिंतक दूषययू  
अद ॥ ॥ सहजसंज्ञावय उदनागत धनीया २ य  
सायनमवास्तनय ॥ ॥ ॥ अवधूअ उदयचन्द्रपा  
यः प्रसाद २ गीर्तिदूषय लवचक्रनवधि ॥ ॥  
॥ ॥ जागमाला ॥ ॥ अकमालाकर्णधृत्वावसान  
स्थवलिखया ॥ ॥ जयति जाधुवीतीयः काभादनामप्रदि  
मिना ॥ ॥ ॥ जागकाभादलेनवी ॥ ॥ ॥ अदिदूधना



॥ अदिद्वयद्वयकन ॥

थ श्रीकृष्णमय २ पुस्तनसिलविहाय समाधिजाग  
॥ ५२ ॥ श्रीद्वयकनतया लोकनाथ २ जगतसंसाय  
सत्त्वप्राप्तिउधाय ॥ ॥ श्रीश्रीकृष्णनि मायाद्वीप  
सूर्य २ लवद्वयनाशार्थ अर्तदत्ता ॥ ॥ ध्यानदि  
क्षित्वलवद्वयहृदयार्थ ॥ लोहभाहमाया नासनक  
र्ण ॥ ॥ स्वत्यापमितालभाहृदय २ लक्ष्मीजनध  
नवलरुलप्रसादा ॥ ॥ लनयिमूधममदायना  
क्षि २ अज्ञान नासनचपलसुवन ॥ ॥ ॥

॥ अज्ञाननिध्याट ॥

॥ अवननिध्याट ॥

वागअन्धालि ॥ तालसाक ॥ ॥ अवननिहितजा  
नविलासनदेहा २ कुरुकुत्रिनयनरिषमदेहा ॥  
॥ ५२ ॥ तैनादृश २ दृशदृशजात अचलकाधलाया  
॥ ॥ निविधितयनदृति ॥ धरितलैला २ योशय  
अधवीष्टितवननाथ ॥ ॥ हविहवप्रका ॥ ॥  
चउमाला २ मालविद्यनदृति ॥ अत्रहृदयहृदय ॥  
विविधियतनभालि ॥ लंकृतदेहा २ जगतवाजितः  
वलरुलप्रदान ॥ ॥ ॥

॥ अज्ञाननिध्याट ॥



॥ वरुणाजीनी ॥

गगमाव ॥ तालमा ० ॥ ॥ वरुणाजीनी हव  
लाया २ त्रिहवननाथ दहिमया ॥ ५ ॥ यिव  
०० मसाय समसासुव कुपिया २ वरुदेवी रुल  
अनुरुलला ॥ ॥ उधना विप्रिदल कमलस  
याग २ दहिवीया अपवन हलिये ॥ ॥ रुज ००  
यपक्रमसासुव कुपि २ यक्रमस विजवायने ॥  
॥ ॥ सनगुपय सादचतुर्थाहिकुके २ याने खेव  
संसाय समुद्रा ॥ ० ॥ ॥ गगयद्वजनि ॥ ताल

॥ विपयप्रसथानियाद्याट ॥

॥ वरुणाद्याट ॥

॥ दिवहृज ॥

॥ दिवहृज प्रक्रमवतकवर्ध २ नजनमदूदक  
अत्रिनिनाचना ॥ ५ ॥ नमादेवीवृद्धजकिनी  
जिनहननी २ त्रिहवनयायिनी जिनहानज  
किनी ॥ ॥ दहिनकवतिवकुविलासितदध  
तिश्वामकयातकचतुसायसवयि ॥ ॥ तव  
नीमधुलमाय ॥ उदिया नगमन २ वतनयव  
लगनतयवेमिन ॥ ॥ श्रीविद्याधविदेवीसूनन  
यमहिना ॥ ॥ सकल अद्विष्टिदहिममाना ॥ ० ॥ ॥

॥ मधुलसमयमाद्याट ॥

॥



॥ कलितवज्र ॥

वागमध्वना ॥ तालद्वय ॥ कलितवज्रानवज्जी  
चक्रसम्भवकालाद्वज्रिकाजवप्रमाद ॥ मांसा  
रुति मद्यमानससंयुक्ता यचरुसालिमद्यमानस  
कनु ॥ ५२ ॥ खेखेखाहि २ नेज्वकन्दनयच  
मियायस अलिवलिना ॥ जीवजयागिणी ॥  
विहीनामाखेखेखाहि २ नेज्वकन्दनयच  
चुतिह विपविपंज्वनमल कलग किलिकि

॥ कलितवज्र ॥

५२ ॥

लायमान ॥ उमपूयष्ठाधनिप्रमूदिनवाजिया  
लेदानयनि विघ्नविनासिना ॥ ५३ ॥ यागिणीयच  
दवीयचक्षमद्यतत्वेना रवकुसूरुसान्निधिया  
मायविनासनवक्रकसयया अहिमनसखरु  
लभाकरवकु ॥ ५४ ॥ सर्वसिधिलवा ऊरु जाग  
नाकवाकृति आचार्य सान्निधिरुसा ययमाकृ  
तिरुलपाधिसयया अनूक्तपूजनसत्त्वमाकप्रदाना ॥ ० ॥

॥



॥ अथ विद्या टक ॥

गङ्गा ललित ॥ ॥ अथ विद्या न कर्कश काय संज्ञा न र  
गङ्गा मूर्ख गङ्गा पति शालि वृक्ष दक्ष ॥ ३ ॥ नमो मि  
श्रुत मूर्ख का धया गा र्ध्व व क नील वर्ण र्पि ग ल  
केश ॥ ॥ षट् लङ्ग दहि द क न र्क अ क द म र्  
श्वाम कया ल धु य पा ग र्व द्वा ग धा यि ॥ ॥ मूर्ख  
माल व्याघ्र चर्म त म्बा उ ना र द ह दि ग मा न वि ध्व  
ग ह वी ना ॥ ॥ म धि सि धी व ल वि ध्व वि ध्व स न र

॥ अथ विद्या टक ॥

॥ श्रीमद्भक्त गोप ॥

भवति कर्कश काय वज्र गीता ॥ ० ॥ ॥ गङ्गा क  
नदि ॥ ॥ श्रीमद्भक्त नाथ वन महा चित विजया र च  
लुहा स र्व र्ध धा यि ना ग वा स द क्ष न ॥ ३ ॥ नमो  
मि र्श म र्श क माला र ज ग दि र्ध न ज ग न गु रू ह  
व ह व्या यि ना ॥ ॥ य र्व क ध न स र्व य द म गु रू ला य  
र श्री ध र्म धा नु स्थ न न्य पा ल म ह ल र्ध क ना ॥ ॥  
ज ग न ना थ ज ग न नि र्व ज न ना थ र स र्व सा नु वि ध  
ल प हित नि र्व ज ना ॥ ० ॥ ॥

॥ श्रीमद्भक्त गोप ॥



॥ कृष्णाय नमः ॥

जागलामकवि ॥ नालमा ॥ ॥ श्रीकृष्णपालगी  
लिखवननिवासिताः अमिताहसिलमालिधल  
॥ ५२ ॥ नमामि श्री आनंददिलाकधनः प्रिह  
वनवापितसूमंगला ॥ ५२ ॥ मनिमयस्वरि  
नपर्वतज्जनाधनः नकवर्धकमनासनं ॥ ५२ ॥  
वेतजागसंज्ञन अन्नरूपल्लोद्यपन्नः लघुनिमृगु  
क्रियलसंपदना ॥ ५२ ॥ अन्नन्यमनाहनः वा

॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥

॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥

गमनिमल्लोतविधिनिविद्ययक गद्येऽथ  
ना ॥ ५२ ॥ ॥ नागकुरु ॥ ॥ भववेसान  
लमिहितवदना ॥ ५२ ॥ विधिगलकः श्रीकालि  
कादेवी ॥ ५२ ॥ जगदभाऊकालीः श्रीचामुन्दादे  
वी ॥ ५२ ॥ सूर्यसमदहाः विद्वकपालधना ॥ ५२ ॥  
लहजदयः स्वर्णरुतकधना ॥ ५२ ॥ कालचक्रदह  
नवः अलिंगनसमाधि ॥ ५२ ॥ नागविशुद्धिः म

॥ श्रीगुरुदेवाय नमः ॥